दैनिक भास्कर
मेड़ता भास्कर 29-12-2024

आयोजन • साहित्य अकादेमी एवं श्री चतुर्भुज शिक्षा समिति द्वारा राष्ट्रीय परिसंवाद आयोजित

मीरा ने अपने कर्म से सकल विश्व में प्रेम की प्रतिष्ठा स्थापित की: अर्जुनदेव

दो मिनट का मौन रख पूर्व प्रधानमंत्री को श्रद्धांजलि अर्पित की

भास्कर न्यूज़|मेड़ता सिटी

श्रीमद्भगवद् गीता में भक्तियोग को ज्ञान एवं कर्मयोग से बड़ा बताया है क्योंकि इसमें आत्मा की प्रतिष्ठा प्रेम के रूप में होती है। मीरा ने अपने कर्म से सकल विश्व में प्रेम की प्रतिष्ठा स्थापित की यह विचार ख्यातनाम कवि-आलोचक प्रोफेसर (डॉ) अर्जुनदेव चारण ने साहित्य अकादेमी एवं श्री चतुर्भुज शिक्षा समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद के उद्घाटन समारोह में अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि एक तरफ जहां मीरांबाई ने मारवाड़ एवं मेवाड़ के यश को सूर्य की भांति प्रकाशमान किया है वहीं उन्होंने समाज की कुरीतियों एवं कुप्रथाओं के विरुद्ध लोक में जन चेतना जगाकर देश को एक नई दशा और दिशा प्रदान की।

संगोष्ठी संयोजक डॉ.रामरतन लटियाल ने बताया कि ख्यातनाम कवि-आलोचक प्रोफेसर (डॉ) सत्यनारायण ने कहा कि मीरा बाई अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से पूरे विश्व को प्रभावित किया है। आज जब दुनिया स्त्री विमर्श की बात कर रहा है आज से पांच सौ वर्ष पहले मीरा बाई नारी शक्ति के रूप में एक अनुपम उदाहरण है। गिरधर कृष्ण को अपना आराध्य मानकर अपना जीवन व्यतीत करने वाली मीरा विश्व की एक सर्वश्रेष्ठ कवयित्री है जिनका राजस्थानी भाषा में लिखा भक्ति काव्य विश्व में अद्वितीय है। संचालन संगोष्ठी संयोजक डॉ. रामरतन ने किया।

मेड़ता सिटी. आयोजन में मौजूद लोग।

कार्यक्रम के प्रारंभ में भक्त शिरोमणि मीरांबाई के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलित किया गया। उसके बाद दो मिनट का मौन रखकर देश के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहनसिंह की दिव्य आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस दौरान श्री चतुर्भुज शिक्षा समिति के उपाध्यक्ष नारायणसिंह भाकर ने स्वागत उद्बोधन दिया। साथ ही एक दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद में आए प्रोफेसरों ने मीरांबाई के जीवन की जानकारी दी।

साहित्यिक सत्र हुआ

जिसमें डॉ. रामरतन काव्य परम्परा एवं मीरांबाई तथा डॉ.रीना मेनारिया ने राजस्थानी लोक मानस में मीरांबाई विषयक आलोचनात्मक शोधपत्र प्रस्तुत किये। डॉ. सवाईसिंह महिया ने मीरांबाई की भक्ति साधना एवं श्यामसुन्दर सिखवाल ने इतिहास के उज्ज्वल उजास में मीरांबाई विषयक महत्वपूर्ण आलोचनात्मक शोधपत्र प्रस्तुत किए। डॉ.गजेसिंह ने कहा कि मीरांबाई का जीवन एक अबूझ पहेली है जिसे आज तक कोई भी सुलझा नहीं पाया मगर मीरांबाई के जीवन एवं सृजन पर नई दृष्टि से विचार करने की आवश्यकता है। डॉ.जगदीश कहा कि मध्यकालीन समय में देश अनेक महिला संत या कवयित्रियां हुई है मगर किसी भी कवयित्री पर मीरा जैसा ना तो सामाजिक दबाव था और ना ही साहस। मीरा का साहस अद्भुत था।

समापन समारोह में गलत धारणाओं को लेकर चर्चा

मेड़ता सिटी. मंच पर उपस्थित अतिथि।

समापन समारोह में अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में ख्यातनाम कवि-आलोचक प्रोफेसर अर्जुनदेव चारण ने कहा कि शास्त्रीय से लोक साहित्य सदैव श्रेष्ठ और विशाल है। इस लोक ने मीरांबाई को जो प्रेम एवं मान-सम्मान दिया वो कबीर में अद्भुत है। इस अवसर पर उन्होंने भारतीय ज्ञान परम्परा के उदाहरण पेश कर मीरांबाई की भक्ति साधना को रेखांकित किया। मुख्य अतिथि उद्बोधन में प्रतिष्ठित कवि-आलोचक डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने कहा की मीरा एक पतिव्रता नारी थी उन्होंने ऐसे कोई भी पद नहीं लिखे जो जिससे मारवाड़ या मेवाड़ की प्रतिष्ठा को आंच आये। असल में मीरा के नाम से अनेक अन्य लोगों ने पद लिखकर मेवाड़ राजवंश के विरुद्ध गलत धारणाएं फैला दी जो किसी भी दृष्टि से प्रामाणिक नहीं है। शिक्षाविद भवानीसिंह राठौड़ ने आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर भवानी सिंह मेड़तिया, गोविंद राम मेड़ा, सीबीईओ, श्रीराम खोजा, घनश्याम पारीक, लादूसिंह खेतोलाई, इन्द्रसिंह राठौड़, महेंद्रसिंह भैरूंदा, राजूराम फलोदिया, बंटू सा, डॉ. कालू खां, भंवरीलाल चारण, रामअवतार दाधीच, मीरा चौधरी, हरभजन लाम्बी, ओमप्रकाश, रामकरण भादू, रामगोपाल सांखला, करणाराम डारा, सीपी सिहाग, उम्मेद सिंह मेड़तारोड़, मदनलाल प्रजापति, जितेंद्र सिखवाल, उमेश, मंगीलाल चिचकिया, भैराराम गोलिया, रामस्वरूप मेड़ा, नियाज मोहम्मद सलावा, देवेन्द्र सिंह पूर्वन, रामचंद्र डारा, नवीन डारा, चेतन फलोदिया, जितेंद्रसिंह चौधरी, नरेंद्र सिंह जसनगर, शोध-छात्र किशन केशोसिंह सोढास, सुरेंद्र सिंह गेमलियावास, मनोज शर्मा, छोटाराम बोलाणा सहित अनेक विद्वान रचनाकार, शिक्षक एवं शोधार्थी मौजूद रहे।